P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-XI*July-2016

हिन्दी के रेखाचित्र और महादेवी वर्मा

कल्पना तिवारी
निर्देशक एवं प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय वेंकट संस्कृत
महाविद्यालय, रीवा मप्र
रीवा, मप्र

सुन्ता गुप्ता
शोधार्थी,
शोध अनुसंधान केन्द्र,
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,
रीवा,म.प्र.

सारांश

हिन्दी साहित्य की गद्य विधाओं के रचनाओं में रेखाचित्र का महत्वपूर्ण स्थान है रेखा चित्रकारों में महादेवी अन्य रेखा चित्रकारों के अपेक्षा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। रेखाचित्रकारों ने अपनी लेखनी से जो वर्णन किए हैं वे अत्यंत सजीव है। प्रथम रेखाचित्रकार के रूप में पद्म सिंह शर्मा को स्वीकार किया गया है। आपका रेखाचित्र 'पद्रम पराग' सन 1925 ई. में प्रकाशित हुआ। हिन्दी साहित्य जगत में रेखाचित्रकारों ने अपने जीवन में घटित घटनाओं एवं पात्रों का क्रमबद्ध विवेचन इस प्रकार से किया हैं। जो पाठकों के मन को मोहले और घटना को जीवंत बना दे।

मुख्य शब्द : रेखाचित्र, रागोत्प्रेरक, चित्रकला

प्रस्तावना

गद्य की इस नवीन रूप में किसी व्यक्ति वस्तु अथवा दृश्य का शब्द–चित्र सामने लाया जाता है। कुछ विचारक, जिनमें सत्यपाल, चुघ एवं रामवृक्ष बेनीपुरी मुख्य है। रेखाचित्र को शब्द चित्र नाम देना चाहते हैं। अपने मत के समर्थन में ये विचारक यह तर्क देते हैं कि रेखाचित्र में हल्का–फुल्कापन नहीं रहता। यह एक गंभीर रचना है। यह एक ऐसी रचना है, जिसमें व्यक्ति वस्तु या दृश्य का उल्लेख करते समय रचयिता रागोत्प्रेरक शब्दावली का प्रयोग करता है। जिसके परिणामस्वरूप पाठक के समक्ष वर्ण्य विषय की बनावट उपस्थित होती हुई प्रतीत होती है। अर्थात् जिस प्रकार किसी चित्र द्वारा दर्शक के हदय में रेखाओं के माध्यम से भाव–विशेष को जागृत कर दिया जाता है, उसी प्रकार रेखाचित्र के माध्यम से शब्दों की सहायता से एक ऐसा वातावरण उपस्थित कर दिया जाता है, जिसके कारण ऐसा लगता है कि वर्णित व्यक्ति या वस्तु या दृश्य दृष्टा के समक्ष खड़ा है।

रेखाचित्र का अभिप्राय होता है

रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति वस्तु या दृश्य के आकार को खींचकर सामने लाना। इसलिए रेखाचित्र के शब्द को चित्रकला का शब्द कहना असंगत न होगा। बाह्य रेखाओं पर आधारित रहने के ही कारण लक्षित चित्रों का रेखाचित्र की अभिधा प्रदान की जाती है। रेखाचित्र में आश्रय द्वारा आलंबन के रूप में सौंदर्य तथा उसकी चेष्टाओं आदि को अंकित किया जाता है। चित्रकार अपनी पेसिंल और रंगों के द्वारा किसी व्यक्ति वस्तु या दृश्य को साकार और सजीव बना देता है। इसलिए इसे शब्द चित्र की भी अभिधा प्रदान की जाती है। रेखाचित्र एक ऐसी रचना है, जो किसी घटना या व्यक्ति को सजीव रूप प्रदान करती है।

रेखाचित्र के इसी वैशिष्टय के कारण डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है कि

''रेखाचित्र एक ऐसी रचना के लिए प्रयुक्त होने लगा जिसमें रेखाएँ हो, कथानक का उतार–चढ़ाव आदि न हो, तथ्यों का उदघाटन मात्र हो, पूर्व आयोजन अथवा आयोजित विकास न हो''[1]

इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि रेखाचित्र में तथ्य संयोजित नहीं किए जाते, या इकठ्ठा नहीं किये जाते हैं। शब्दों के माध्यम से वे स्वतः खुलते जाते हैं। इसलिए पहले से प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

हिन्दी साहित्य जगत के गद्य विधा में, पद्रम सिंह शर्मा के अलावा श्री राम शर्मा, प्रकाश चन्द्र गुप्त, रामवृक्ष बेनीपुरी तथा महादेवी वर्मा प्रमुख एवं प्रसिद्ध रेखाचित्रकार हैं।

हिन्दी साहित्य जगत में रेखाचित्रकारों ने रेखाचित्र के माध्यम से समाज में फैली बुराईयों एवं प्रथाओं पर करारा जबाब दिया है। जो निम्न एवं मध्यम वर्गीय व्यक्तियों द्वारा नारियों पर किया गया अत्याचार एवं अन्याय है। वे किस प्रकार से उसे साहस के साथ सहन करती है और अपना जीवन यापन करती है, उनका दर्दनाक एवं दुःखभरी कहानी पढ़कर सहसा मन काँप उठता है। रेखाचित्रकारों का उददेश्य निम्न वर्गीय लोगों एवं नारियों को इस प्रकार के अत्याचार एवं कुरीतियों से उन्हें उबारना एवं उन्हें अच्छे जीवनयापन करने की शैली प्रदान करना। निम्न एवं मध्यम वर्गीय किसान किस प्रकार से मेहनत एवं

पशुपालन दिन–रात पूरे मनोयोग से करते हैं। फिर भी किसान और उसके परिवार को पेटभर भोजन भी नहीं मिल पाता है। फिर भी वे अपने जीवन यापन करने में संतुष्ट हैं। अपने कर्म तथा परिवार का भरण–पोषण करना ईश्वर का उपहार मानते हैं।

महादेवी जी ने सामाजिक पक्ष का व्याख्यान अपनी गद्य रचनाओं के रेखाचित्र में की है। 'अतीत के चलचित्र' में आप संस्मरणात्मक ग्यारह रेखाचित्रों का वर्णन रेखांकित किया है। इन रेखाचित्रों में रामा, सूर अलोपी कूजड़ा, बदलू, कुम्हार, लक्षमा, मारवाड़िन विमाता के द्वारा दी जा रही यातना से आक्रान्त है, परित्यक्ता सबिया भंगीन, घीसा, विधवा माँ और वैश्या पुत्री है। ये सभी पात्र समाज के कठोर श्रृंखलाओं में बंधी हुई सिसकती रहती है। अतीत के चलचित्र में आपने सामाजिक चेतना के अनुभूति के स्वर को आक्रामक स्तर पर शक्तिशाली और क्रान्तिदर्शी बनाया है। आपकी रेखाचित्र रचना में युगीन, दुःखी, उपेक्षित, मानवों के प्रति संवेदना प्रकट की गयी है। 'अतीत के चलचित्र' में मुख्य रूप से रामा, सबिया, घीसा तथा लक्षमा के बारे में वर्णन निम्न हैं

रामा आपके घर का नौकर है जो मुख्य रूप से साफ–सफाई तथा आप और आपके भाई बहनों की देख–रेख करता है। रामा मंदिर धोना, कपड़ा धोना तथा आप और आपके भाई बहनों को मंजन कराना तथा नास्ता, खाना खिलाने, तथा सुलाने का काम भी करता है।

आप उनके (रामा) के शरीर के बारे में वर्णन करती है–'सांप के पेट जैसी सफेद हथेली और पेड़ की टेढ़ी–मेढ़ी गाँठदार टहनियों जैसी उंगलियों वाले हाँथ की रेखा–रेखा हमारी जानी बुझी थी, क्योंकि मुँह धोने से लेकर सोने के समय तक हमारा उससे जो विग्रह चलता रहता था, उसकी स्थायी संधि केवल कहानी सुनते समय होती थी। उसी प्रकार नाटे, काले और गठे शरीर वाले रामा के बड़े नखों से लंबी शिखा तक हमारा सनातान परिचय था।[2]

आप रामा से 'राजा भइया' कहलवाती हैं, और ऐसा कहने से उनका छोटाभाई नाराज होता है रामा अपनी चतुराई से दोनों के कानों में राजा भइया कह कर उन्हें फुसला लेता है। रामा बुंदेलखण्ड का ग्रामीण बालक विमाता के अत्याचार से भाग कर मांगता–खाता इंदौर तक पहुंचा था।

एक बार रामा सभी को मेला देखने ले जाता है, जहाँ मेला में आप खो जाती हैं, और दुकान पर बैठकर मिठाई खा रही होती हैं तभी रामा खोजते हुए वहाँ पहुँच जाता है।

'मेरा बचपन समकालीन बालिकाओं से भिन्न रहा, इसी से रामा का उसमें विशेष महत्व है।'[3]

रामा आपकी माँ के कहने पर अपनी पत्नी को लेकर आता है किन्तु आप तथा आपके भाई बहनों को बचपना के कारण यह पसंद नहीं था। इसलिए आप उसकी पत्नी पर दोषारोपण करती हैं। रामा अपनी पत्नी को छोड़ देता है। इसके कुछ दिनों पश्चात वह स्वयं भी चला जाता है।

सबिया

सबिया आपकी नौकरानी है। सबिया सावित्री जैसी पवित्र है। आप सबिया का वर्णन करते हुए लिखती है कि–उसका मुख चिकनी काली मिट्टी से गढ़ा जान पड़ता था, परन्तु प्रत्येक रेखा में सांचे की वैसी सुडौलता थी, जैसी प्रायः पेरिस प्लास्टर की मूर्तियों में देखी जाती है, आँखों की गठन लंबी न होकर गोल–मोल होने के कारण उनमें मेले में खोए बच्चे जैसी समय चकित दृष्टि थी। हाँथ–पैर में मोटे–मोटे चमकविहीन गिलट के कड़े उसे कैदी की स्थिति में डाल देते थे। कुछ कम चौड़े ललाट पर जुड़ी भौहों के ऊपर लगी पीली काँच की टिकुली में जो श्रृंगार था। वह भटकटैया के फूल से घूरे के श्रृंगार का स्मरण दिलाता था।[4]

सबिया ऐसी स्त्री है जिसका पति उसे सौरी में छोड़कर किसी अन्य की पत्नी बेला के साथ परदेश चला जाता है। सबिया की जब बेटी हुई थी तब वह बीमार पड़ गयी थी। जिसके कारण उसका काम छूट जाता है। इसके पश्चात् वह आपके हामी भरने पर आपके घर में अपनी बेटी को कमर में बाँधकर या सुलाकर काम करती है। एक दिन जब वह खाना लेकर जा रही थी तो आपने उसे वहीं पर खाने को कहा तो वह कहती है

'बच्चियाँ के आँधर–घूँधर आजी है मलकिन। ओहका बिन खियाये–पियाये कसत खाब।[5]

इसके बाद उसका पति परेदश से आता है और साथ में बेला को भी घर में रखता है। सबिया इसके लिए राजी हो जाती है। सबिया अपने पति के कहने पर आप द्वारा दी गयी साड़ी बेला को दे देती है और जाति भाइयों को बेला के सौत के रूप में रखने पर हर्जाना भी आप से माँगकर भरती है। सबिया जाति भाइयो को खिलाती है। बेला और उसके पति के घर आ जाने पर उसका जीवन और कठिनाई से गुजरता है।

घीसा आपका शिष्य है। घीसा के पिता इस दुनिया में नहीं रहे। माँ उसका लालन–पालन करती है। गंगा पार कर के आप घीसा` के गांव में पढ़ाने जाती है। वहाँ पर बहुत से बच्चे पेड़ के नीचे पढ़ते हैं। घीसा उन्हीं में से एक है। एक दिन आप जलेबी ले जाकर सभी बच्चों को बंटवाती है। घीसा जैसे ही जलेबी पाता है, दौड़कर घर आ जाता है। पाँच जलेबी उसको मिलती है जिसमें से वह दो स्वयं तथा दो माँ के लिए ठाठ में खोंस देता है और एक अपने पिल्ला को खिला देता है, जब आप पूछती है कि घीसा कहां है?

तब उन्हीं में से एक बच्चा बोलता है

'सार एक ठो पिलवा पाले है, ओही का देय बर गा होई।'[6]

जब वह लौटकर आता है तब आप द्वारा जलेबी और लेने के लिए पूछने पर कहता है–गुरू साहब पिलवा एक पाया है उसी को दे दीजिए। पिलवा घीसा का कुत्ता है।

घीसा अपना कुर्ता देकर आपके लिए तरबूज गाँव से थोड़ा सा कटवाकर, चीख कर लाता है। उसकी ममता को देखकर आप तरबूज स्वीकार कर लेती है।

कुछ दिन बाद आपके द्वारा पता लगाए जाने पर वह गाँव में नहीं होता है और उसकी मृत्यु हो जाती है।

लक्षमा

लक्षमा ऐसी उत्पीड़ित नारी है जिसकी शादी तो होती है, परन्तु उसका पति कम बुद्धि का होता है। जिससे उसके ससुराल में जेठ, जिठानियों द्वारा खुब

प्रताड़ित किया जाता है। एक बार वह ससुराल में खूब मारपीट कर , मरी समझकर जंगल में फेंक दी जाती है। फिर होश आने पर वह अपने मायके आ जाती है। लक्षमा मायके में ही रहने लगती है तथा ससुराल कभी न जाने का प्रण कर लेती है।

मैके में लक्षमा के अंधे पिता, माँ जिसका हाँथ टूट गया है, भतीजे–भतीजी जिसकी माता परलोक वासिनी और पिता विरक्त हो चुका है। सभी का भरण पोषण लक्षमा करती है। साथ ही साथ आपका ध्यान भी रखती है। वह आपके लिए जो भी उसके पास उपलब्ध होता है जरूर लेके जाती है और आपसे खाने के लिए विनती करती है।

ससुराल में पता चलने पर कि वह जिन्दा है उसे लेने उसके मायके में ससुराल वाले आते हैं लेकिन वह मना कर देती है, बल्कि कहती है कि उसके पति उसके मैके में ही आ जायें वह उनका यथायोग्य। जितना अधिक से अधिक हो सकेगा सेवा करेगी लेकिन ऐसा नहीं होता है।

लक्षमा आपकी बहुत विश्वास पात्र रही। लक्षमा गाँव के लोगों द्वारा कुछ कहने पर कहती थी।
रहने दो, जैसा करेगा, वैसा पायेगा।[7]

लक्षमा अपने देवी देवता से कहती हैं कि जो उसे बुरी नजर से देखेगा उसकी आँख फूट जायेगी। गांव के लोग जब आपको बताते है तब आप उसको समझाती है कि तुम सबके कल्याण के लिए मनाया करो तब से वह सबके हित एवं कल्याण के मनाने लगी।

स्मृति की रेखाएँ

'स्मृत्ति की रेखाएँ' आपकी दूसरी रेखाचित्र है जिसमें लेखनी ने अनुभूति और अभिव्यक्ति के क्षेत्र में प्राण संचार कर दिया है। भक्तिन, चीनी फेरीवाले, जंगिया और धनिया, ठकुरी बाबा, गूंगिया तेलीन, धोबिन आदि के चित्र मानस चक्षुओं के सामने प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित की है। इन चित्रों में माँ की ममता बहन को स्नेह, नारी की करूणा, सामाजिक जीवन के विविध पक्षों के साथ–साथ दिखाई देता है।

आपके 'स्मृत्ति की रेखाएँ' के कुछ रेखाचित्र के पात्रों का संक्षेप में वर्णन निम्न हैं।

भक्तिन आपकी विश्वासी एवं कर्तव्यनिष्ठ सहायिका है, भक्तिन आपके दिये हुए हर कार्यों को बहुत ही मन लगाकर करती है। भक्तिन रसोई से लेकर कपडे धोने तथा आपके अध्ययनन कार्य में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदाकर करती है।

चीनी फेरीवाले

चीनी फेरी वाले के पिता का स्वर्गवास हो गया था। उसका लालन–पालन उसकी बहन करती है। एक दिन वह भी चीनी फेरी वालों को छोड़कर चली जाती है, और वापस नहीं लौटती है। फिर वह गिरोह में फंस जाता है। गिरोह वाले उसे बहुत प्रताड़ित करते हैं। किसी प्रकार वहाँ से छूटकर वह अपने पिता के मित्र के आदेश से कपड़ा लाकर घूम–घूम कर बेचता है। आपको वह बहन बोलता है। आपके मन न रहने पर भी आप उसका कपड़ा लेती थी। अंत में वह अपना उसका कपड़ा लेती थी अन्त में वह अपना सारा गठ्ठर ही आपको देकर उसका मूल्य लेकर अपने देश चीन युद्ध में चला जाता है। उसको अपने देश से बहुत लगाव है।

ठकुरी बाबा

ठकुरी बाबा का स्नेह भी आपको प्राप्त हुआ। ठकुरी बाबा से मुलाकात आपको कल्पवास में हुई थी। ठकुरी बाबा धार्मिक प्रवृत्ति से ओत–प्रोत परम सज्जन व्यक्ति थे।

उद्देश्य

रेखाचित्र में रेखाओं के द्वारा नारी जीवन में हो रहे अत्याचार एवं प्रताड़ना को कम करना हैं। समाज में नारी को सम्मान एवं सर्वोपरि स्थान मिलना चाहिये। इसके अलावा निम्न एवं मध्यम वर्ग के किसान जीवन की कठिनाइयों एवं समस्याओं को उभारकर उनकी इन समस्याओं से निवृत्ति दिलाना है।निम्न वर्ग के लोगो के प्रति मन में छुआछूत, द्वेष,घृणा भाव के स्थान पर सम्मान एवं समान दृष्टिकोण रखना चाहिये।

निष्कर्ष

अतः हिन्दी साहित्य जगत के गद्य विधा में रेखाचित्र की सही शुरूआत आपकी रेखाचित्र रचनाओं के द्वारा होता है। साहित्य जगत की गद्य विधा में आपका रेखाचित्र वर्णन प्रभावी एवं सजीव दृष्टिगत होते हैं। आपने लेखनी में ऐसे चित्रों को उभारा है जिसका अध्ययन करने से पाठक का रोम–रोम कांप उठता है। आपकी प्रतिभा का प्रखर एवं तेजस्वी झलक आपके साहित्य में दिखाई देते हैं।

हिन्दी साहित्य जगत में आपके रेखाचित्र अमूल्य निधी है। आपके अपने रेखाचित्रों के द्वारा पाठकों के मन को मोह लिया है, वह जब आपके रेखाचित्र पढ़ते हैं तो खाना, पीना, सोना, सब भूल जाते हैं। उनकों सभी प्रकार की तृप्ति आपके रेखाचित्र को पढ़कर मिलती है। उनके सामने जिस रेखाचित्र को वे पढ़ते है उसका चित्र ऐसा लगता है मानो वह सामने उपस्थित हैं।

उनकी रेखाचित्र के उददेश्य की पूर्ति के लिए हमने निम्न काव्य के पद को लिया है।

1. ''नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजतनभपग तल में, पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में''[8]
2. ''मैं नीर भरी दुःख की बदली!
   स्पन्दन में चीर निस्पंद बसा
   क्रन्दन में आहत विश्व हँसा
   नयनों में दीपक से जलते
   पलकों में निर्झरिणी मचली।[9]
3. ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
   आँचल में है दूध और आँखों में है पानी।।[10]

उपरोक्त वर्णन में नारी जीवन में हो रहे अत्याचार, किसान जीवन, निम्न वर्गीय लोगों के प्रति मन में विक्षोभ, द्वेष आदि दर्शाया गया है जो अक्षरशः सत्य प्रतीत होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. निबंध एवं अन्य विधाएँ
2. डॉ. जैन निर्मला, महादेवी संचयिता (अतीत के चलचित्र, रामा)
3. डॉ. जैन निर्मला, महादेवी संचयिता (अतीत के चलचित्र रामा)

4. डॉ. जैन निर्मला, महादेवी संचयिता (अतीत के चलचित्र–सबिया)
5. डॉ. जैन निर्मला, महादेवी संचयिता (अतीत के चलचित्र–सबिया)
6. डॉ. जैन निर्मला, महादेवी संचयिता (अतीत के चलचित्र–घीसा)
7. डॉ. जैन निर्मला, महादेवी संचयिता (अतीत के चलचित्र–लक्षमा)
8. प्रसाद, जयशंकर (कामायनी)
9. वर्मा, महादेवी (साध्यगीत)
10. गुप्त, मैथिलीशरण (यशोधरा)